IMPACT FACTOR : 5.373 ISSN 2230-8938

# ANUSANDHAN VATIKA

VOLUME - IX ISSUE - I

UGC Approved

March - 2019

S.K.V.S.A.S. UTTARKASHI • UTTARAKHAND •

(A Half Yearly Inter-Disciplinary Research journal of Human Existence)

# ANUSANDHAN VATIKA

(A Half Yearly Inter Disciplinary Research Journal of Human Existence)

**EDITOR**
Suresh Chandra

**SUB-EDITOR**
Yamuna Prasad
Umesh Dhyani

**BOARD OF EDITORS**
K.N. Jena
M.M. Semwal
A.K. Agrawal
Rakhi Panchola
Mamtesh Kumari

**MANAGING EDITORS**
Preeti Arya
Shikha Mamgain

**PUBLISHED BY**
Sahitya Kala Vigyan Tatha Sanskriti Anusandhan Samiti
Uttarkashi , Uttarakhand-249193
INDIA

***Anusandhan Vatika, Volume-IX, Issue-I, March-2019***

**PATRON**

Yash Gulati, Ex-HOD, Deptt of Hindi
Punjab University, Chandigarh (UT)

Shekhar Pathak, Ex HOD, Deptt. Of History
Kumaon University, Nainital (University)

# TABLE OF CONTENT


| | | | |
|---|---|---|---|
| Dr. M.K. Nagesh | - | Diversity of grass flora in India | 1-5 |
| Dr. Rama Gupta | - | Value and exploitation of indigenous knowledge related to biodiversity | 6-11 |
| Dr. Seema Sharma | - | Ecological and biological diversity of the floral element in the proposed amarkantak biosphere reserve India | 12-18 |
| Dr. Vinya Benet | - | Biodiversity conservation: different approaches | 19-31 |
| Dr. Parvati Kushram | - | Bird diversity and status in kanaha national park, Mandla, Madhya Pradesh | 32-39 |
| Dr. Judika Kujoor | - | Carbon monoxide pollution in India and its effect on the health of human being | 40-41 |
| Dr. Seema Dhurvey | - | Acute toxicity of define to fresh water bivalve corbicula Striatella | 42-45 |
| Dr. B.J. Jhariya | - | Biodiversity at global and India level with a particular emphasis to pachmari biosphere reserve of M.P. (India) | 46-54 |
| Dr. Indoo Mishra | - | Globalization of the Indian economy: challenges ahead | 55-60 |
| Dr. Shrikant Shrivastava | - | Structural reforms of the financial sector in India | 61-66 |
| Dr. Dilip Dubey | - | Issue of women's employment under structural adjustment policies: the case of south east Asia | 67-69 |
| Dr. M.R. Sihare | - | Craze for liberalization in India and its impact on manpower Utilization | 70-77 |
| Dr. Sarjoo Patel | - | Educational intervention to improve parents" attitudes towards imparting sexual health education to children with autism | 78-84 |
| Dr. Aruna | - | A study on low budget interior design options | 85-91 |
| डॉ. एस.पी. धूमकेती | - | अश्विनो का कलयाणकारी रथ | 92-95 |
| डॉ. पी.एल. झारिया | - | भावनात्मक शक्ति मन्यु : एक अध्ययन | 96-99 |
| डॉ. श्रीमती माला प्यासी | - | राष्ट्रीय चेतना के विकास में संस्कृत साहित्य का योगदान (वैदिक युग से अर्वाचीन युग तक) | 100-105 |
| डॉ. श्रीमती माला प्यासी | - | साहित्य एवं संस्कृति का अविनाभाव संबंध | 106-110 |

# अश्विनौ का कल्याणकारी रथ

डॉ एस.पी. धूमकेती
हिन्दी विभाग शासकीय कन्या महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

**सारांश**

विश्व का निर्माण और संचालन करने वाले तथा एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी एक रूप दिखने वाले भौतिक दैविक तत्व और आध्यात्मिक तत्व ही वैदिक देवता है । निरुक्तकार के अनुसार देवता उसे कहा जाता है जो दूसरों को कुछ देने की सामर्थ्य रखता हो स्वयं प्रकाशित होने के साथ साथ औरों को भी प्रकाशित कर सकता हो । "देवो दानात् द्योतनाद् दीपनाद् वा" । प्रकृति में स्थित भौतिक तत्व मानव को जीवनोपयोगी समस्त पदार्थ देते हैं । आध्यात्मिकी शक्ति देते हैं । एतद्दृष्ट्या ये सभी देवता हैं । वेदों में इन देवताओं के वर्णन ही सर्वतोभाव वर्णित हैं । कहीं जड़ पदार्थ के रूप में तो कहीं चेतन स्वरूप में ऋषियों ने इन्हीं देवों के गुणों और कार्यों का वर्णन करते हुए उनकी स्तुति की है और उनसे भांति भांति की प्रार्थनाएँ भी की हैं । इन स्तुतियों तथा प्रार्थनाओं में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चिंतन के साथ साथ जीवनोपयोगी आधार बिन्दु मुक्ता फल के समान विकीर्ण हैं जो लोक जीवन की समस्याओं की कान्ति से प्रकाशमान हैं । प्रस्तुत आलेख में अश्विनी देवों का रथ किस तरह से लोक का मंगल करने में अथवा जनकल्याण करने में सहायक है – इसे ही रेखांकित किया गया है । जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इच्छित की प्राप्ति ही सुख है । यह सुख भौतिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का होता है । निश्चित समय पर पर्याप्त मात्रा में जब भौतिक वस्तुएँ सर्व साधारण को सहज रूप में प्राप्त हो जाती हैं तो वह सन्तुष्ट होकर अपने आपको सुखी मानता हुआ मानसिक सुख का भी भोक्ता बन जाता है । अतः जनमानस को भौतिक और मानसिक दोनों तरह का सुख प्रदान करना ही लोक का मङ्गल करना है ।

**मुख्य शब्द:** अध्ययन, वातावरण, विश्लेषण, विवेचन ।

**प्रस्तावना :**

अश्विनी युग्म देवता हैं । ये जोड़े में ही रहते हैं । इसी कारण इनके लिये द्विवचनान्त "अश्विनी" इस संज्ञा का प्रयोग किया जाता है । ऋग्वेद में लगभग 50 सूक्त अश्विनी के लिये कहे गए हैं । निरुक्त के बारहवें अध्याय में देवतावाची शब्दों का निर्वचन करते हुए यास्क ने आचार्य और्णवाभ के द्वारा किये गये निर्वचन का उल्लेख करते हुए कहा है कि –

**अश्वैः अश्विनौ इति और्णवाभः** (निरुक्त –12.01.01) अश्वों वाला होने के कारण ही ये देव अश्विन् या अश्विनी नाम से जाने जाते हैं । "अश्व" शब्द अशूङ् व्याप्ती धातु से निष्पन्न हुआ है । अश्नुते अध्वानम् इति अश्वः इस निरुक्ति के अनुसार मार्ग के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जो दौड़कर शीघ्रता से मार्ग को व्याप्त कर ले वह अश्व है । इन्हीं शीघ्रगामी अश्वों वाला होने के कारण अश्विन् देवों को अश्विनी कहा गया है । निरुक्ति में अश्विनी की एक निरुक्ति यह भी दी गई है कि –

"यद्व्यश्नुवाते सर्वम्" – (निरुक्त – 12.01.01)

ये सर्वत्र व्याप्त हो जाते हैं या सभी स्थान पर पहुँच जाते हैं इसीलिये उन्हें अश्विनी कहा जाता है ।

अश्विन् सूक्तों में उनके रूप और कर्म के लिये अनेक विशेषणों का प्रयोग मिलता है । यथा – शिशुमारस्त, नासत्या, शुभस्पती, राजानौ, रथी, रुद्रवर्तनी, भिषजा आदि । इनमें से एक अन्यतम विशेषण है रथी अथवा "रथवान" ।





"अथोह रथी रथ्या 3 राथ्येमि" । ऋग् 01 / 157 / 06

हे अश्विनौ तुम रथों के वहन में कुशल अपने अश्वों के कारण, रथ चलाने में निपुण रथवान हो ।

"रथ" शब्द की निष्पत्ति 'रम्' अथवा 'रह' अथवा 'रस' धातु से मानी गई है । यथा –

रथ शब्द क्रीड़ा करना या रमण करना अर्थ वाली रम् धातु से निष्पन्न है । "रमते यस्मिन् येन वा स रथ" (उणादि – 20.02) ।

गति करना या चलना अर्थ वाली "रह" धातु (भ्वा.पठित) से भी इसे निष्पन्न माना गया है । "रहतेर्गतिकर्मण, स्थिर तेर्वा स्याद् विपरीतस्य" (निरुक्त – 09.02.11) इस निरुक्ति के अनुसार चलने के अर्थ में ही उसकी उत्पत्ति है अथवा स्थिर होता हुआ कहा गया है क्योंकि उसमें बैठा हुआ योद्धा जैसा सुप्रतिष्ठित होता है वैसा, अन्य अश्व आदि में नहीं ।

आल्हाद या आनन्द अर्थ वाली "रस" धातु (भ्वा.पठित) से भी इसे निष्पन्न माना गया है । क्योंकि उसमें बैठे हुए को रस जैसा आस्वादन होता है ।

इन व्युत्पत्तियों के अनुसार 'रथ' शब्द का अर्थ हुआ, जो चलता हो और जिसमें बैठकर रथी आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव करता हो वह 'रथ' है । रथ शब्द के इसी अर्थ के आधार पर ही उपनिषदों आदि में मनुष्य के शरीर को रथ कहा गया है, क्योंकि उसमें बैठकर जीवात्मा चलता है, भाँति भाँति के कर्म करता हुआ आनन्द का अनुभव करता है ।

रथ में स्वतः प्रशंसा या स्तुति की योग्यता नहीं है, परन्तु देवता के उपकरणों में रथ आदि भी प्रशस्त युक्त होते हैं ऐसी प्राचीन मान्यता है । अचेतन होते हुए भी यह कर्म में तत्पर है । यहाँ लक्षणा से अर्थ की निष्पत्ति होगी कि उस रथ का रथी अपने वाहन का उपयोग जन कल्याण में अधिक करता है ।

प्रायः सभी वैदिक देवता अपने दिव्य रथों पर यात्रा करते हैं । इन्द्र, उषा, पर्जन्य आदि देवों के रथों का पर्याप्त वर्णन हुआ है । यहाँ तक कि ऋग्वेद की ऋषिका घोषा के दोनों सूक्त – (10 / 39.40) रथ की विशेषताओं से ही प्रारम्भ होते हैं परन्तु सर्वाधिक सन्दर्भ अश्विनी देवों के रथ के ही प्राप्त होते हैं । उनके रथ को तीव्रगामी, उत्तम अश्वों से युक्त, सर्वव्यापी, शुभ का वाहक, स्वर्णिम, धन सम्पत्ति से परिपूर्ण और लोक मंगल का वाहक माना गया है । अश्विनी देवों के रथ का निर्माण विशेष शिल्पी ऋभुओं ने किया है । अश्विनी का रथ सुन्दर, श्रेष्ठ, और शोभन अश्वों वाला है ।

"रथ स्वश्व" – ऋग् – 01 / 117 / 02

उसमें तीव्र दौड़ने वाले अश्व जुड़े हैं इसीलिये वह बड़ा तेज चलता है ।

"रथ इयदश्वमाशुम" – ऋग् 04 / 43 / 02

अश्विनी के रथ को अनश्व भी कहा गया है ।

"अनश्व यामी रथमावत जिषे" – ऋग् 01 / 112 / 12

हे अश्विनी तुम रक्षा के लिये जिस "अनश्व" रथ को चलाते हो ।

"अश्विनोरसान रथमनश्व वाजिनीवतो" ऋग् 01 / 120 / 10

बलदायक अन्न देने वाले अश्विनी के "अनश्व" रथ को मैंने प्राप्त किया है । यहाँ अनश्व का अर्थ है – जिसमें घोड़े न जुते हों । जिन रथों में अश्व जुड़ते हैं वे तो उनके बल पर चलते हैं परन्तु जिनमें अश्व नहीं जुड़े हैं वे अपने बल पर चलते हैं । इसीलिये अश्विनी के रथ को एक स्थान पर "स्वान" भी कहा गया है । ऋग् 01 / 118 / 01 अर्थात वह अपनी ही शक्ति से चलने वाला है । उसे चलने के लिये अश्वों की अर्थात बाहरी शक्ति की आवश्यकता नहीं है । वह अपनी अन्दर की शक्ति से चलता है । अश्विन् के रथ को "प्रातर्युज" और "प्रातर्यावा" भी कहा गया है ।

"प्रातर्युजं नासत्याधि तिष्ठथ" – ऋग् 10 / 41 / 02

प्रातर्युज शब्द का अर्थ होता है – प्रात काल ही अपने कर्म के लिये जुत जाने वाला और प्रातर्गेता का अर्थ है प्रात ही चल पड़ने वाला । आवश्यकता पड़ने पर यह रथ तीन रात्रियों तक अनवरत चलते रहने की क्षमता रखता है ।

"तिस्त्र क्षपस्त्रिरहाति व्रजद्भि" – ऋग् 10 / 116 / 04

अश्विनी के रथ के लिये "परिज्मा" यह विशेषण भी मिलता है ।

"परिज्मा रथ" – ऋग् 10 / 39 / 01

अर्थात् यह रथ [illegible] और [illegible] सभी दिशाओं में जाने वाला है । यह रथ त्रिवृत है ।

"त्रिवृतो रथस्य" ऋग् 01 / 34 / 09

अर्थात् समुद्र आकाश और भूमि तीनों स्थानों में यह चलता है ।

"या रथः समुद्रे अश्विनेयते" – ऋग् 01 / 30 / 18

हे अश्विनी तुम्हारा रथ समुद्र में चलता है ।

"सिन्धुवाहसा" – ऋग् 05 / 75 / 02

हे अश्विनी तुम समुद्र में पदार्थों का वहन करने वाले हो ।

"परिद्यामियान" – ऋग् 01 / 180 / 10

हे अश्विनी तुम्हारे आकाश में चलने वाले रथ का हम आह्वान करते हैं ।

"रथ ___ आ हि स्थाथो दिविस्पृशम्" । ऋग् 08 / 05 / 28

हे अश्विनी तुम आकाश का स्पर्श करने वाले अर्थात आकाश में उड़ने वाले रथ पर बैठते हो । ये रथ आकाश से उड़कर पृथिवी पर आ जाते हैं ।

"यदन्तरिक्षे पतथः पुरुभुजा यद् वेमे रोदसी अनु" ऋग् 08 / 10 / 06

"परि द्यावा पृथिवी याति सद्य" ऋग् 03 / 58 / 08

हे अश्विनी तुम्हारा रथ आकाश और पृथिवी दोनों जगह शीघ्र पहुँच जाता है । इतना ही नहीं अपना कार्य सम्पन्न करने के लिये ये रथ पर्वतों पर भी आते जाते हैं और उनको फोड़ कर या काटकर उनमें से भी मार्ग बना लेते हैं ।

"विभिन्दुना नासत्या रथेन वि पर्वतां अजरयू अयातम् ।

ऋग् 01 / 116 / 02

हे जरा रहित, पुष्ट शरीर वाले नासत्य (अश्विनी) तुम अपनी रुकावट को तोड़ डालने वाले रथ से पर्वतों पर भी चले जाते हो ।

इस तरह हमने देखा कि अश्विनी का रथ अश्व युक्त भी है और अनश्व भी जो सभी दिशाओं में गमनशील होता हुआ अहर्निश अपने कर्म में तत्पर रहता है । वस्तुत देवताओं के वर्णन के साथ उनके वाहन "रथ" का वर्णन होना स्वाभाविक है, परन्तु ये सब सब देवों की सवारी के रूप में वर्णित हैं । उनमें से अश्विनी का रथ ही एक ऐसा वाहन है जो इसके आवागमन या भ्रमण के साथ साथ नगरवासियों को उनके गन्तव्य तक सकुशल पहुँचाने में सहायता प्रदान करता है । जैसे कहीं उस रथ को नृवाहन कहा गया है ।

नृवाहन रथ – ऋग् 02 / 37 / 05

नरों को वहन करने वाला "नृवाहन" ऐसी वाहन को कहेंगे जिसमें देश के सामान्य या विशेष सभी नागरिक आनन्ददायी यात्रा कर [illegible] गन्तव्य को प्राप्त कर सकें । अश्विनी के इस नृवाहन पर स्त्रियाँ यहाँ तक कि नव वधुएँ भी एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाती हैं ।





"आ रथो [illegible] 3 [illegible]" ऋग् 07 / 69 / 03

"[illegible]" – ऋग् 08 / 08 / 10

तुम्हारा रथ वधुओं के साथ चलता है । विशेष रूप से स्त्रियों के बैठने के सन्दर्भ इस ओर संकेत करते हैं कि अश्विनी का वाहन उन्हें विशेष सुरक्षा भी प्रदान करता है । राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा के लिये सैनिकों की आवश्यकता होती है । इन सैनिकों को भी गोपनीय ढंग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य अश्विनी का यह नृवाहन कुशलता से सम्पन्न करता है ।

"आ नो वीरवत वहतम्" ऋग् 05 / 76 / 05

वीर शब्द पुत्र के साथ साथ क्षत्रिय पुरुषों के लिये भी प्रयुक्त होता है । यहाँ यह कहा गया है कि हे अश्विनी तुम्हारा रथ सब ओर से वीरों का वहन करे । अर्थात सभी सीमाओं पर इन्हें पहुँचाओ ।

अनेक प्रकार की धन सम्पत्तियों का वहन करने वाला होने के कारण यह वसुवाहन के नाम से भी जाना जाता है ।

"वसुवाहन रथम्" ऋग् 05 / 75 / 01

"वसुमन्त वहेथाम्" ऋग् 07 / 71 / 03

हे अश्विनी तुम अपने वसुमान रथ का वहन करो या उसे चलाओ । वसु – अन्न तथा धन दोनों को ही कहा है । प्रजा की समृद्धि और वैभव के लिये अनाज एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं भी अपेक्षित हैं । इन सम्पत्तियों के परिवहन के कारण ही अश्विनी के रथ को वसुवाहन कहा गया है ।

"मधुवाहनो रथ" ऋग् 01 / 157 / 03

यह रथ मधु का वहन कर प्रजा के लिये इधर से उधर ले जाने के कारण मधु वाहन के नाम से भी जाना जाता है ।

"आ नो [illegible] वहन्ता" ऋग् 05 / 76 / 04

हे अश्विनी तुम हमारे लिये रस का वहन करते हुए आओ । ब्राह्मण ग्रन्थों में ऊर्ज का एक अर्थ रस भी किया गया है । ऋषि दयानन्द, सायण आदि ने भी ऊर्ज शब्द का अनेक स्थलों पर रस अर्थ किया है । रस शब्द सभी तरह के रसीले पदार्थों का सूचक है । प्रजा के भिन्न भिन्न प्रकार के प्रयोजनों की सिद्धि के लिये अश्विनी भाँति भाँति के रसों का परिवहन करते हैं ।

इस तरह अश्विन देवों का रथ लोक मङ्गलकारी कार्यों की सिद्धि के लिये विशेष रूप से सहायक हुआ है । रथ प्रतीक है जीवन की पूर्णता का, सृष्टि की दैनन्दिन सञ्चरण करने वाली निरन्तर की धारा का, दिव्य शक्तियों की सर्वव्यापिनी गति का । रथ और उसके विभिन्न अङ्गप्रत्यङ्ग वैदिक प्रतीक हैं जो राष्ट्र की गति, परस्पर सहयोग और एक केन्द्र से जुड़े रहने की भावना को अभिव्यक्त करते हैं । अश्विन देवों के रथ के माध्यम से यह वैदिक प्रतीक पूर्ण हुआ है । देवों दानात् के अनुसार सभी देवता सृष्टि को कुछ न कुछ देते हैं । अश्विन देवों ने भी जन जन तक पहुँच कर उनके दुःख का हरण किया है और मङ्गल के साधक बने हैं ।

अश्विन रथ के माध्यम से अश्विनी के मङ्गलमय भाव और कर्म इक्कीसवीं सदी के भारत के कर्णधारों के लिये प्रेरणाप्रद बनें आलेख का यही उद्देश्य है ।